

उपसंहार

## उपसंहार

कोई भी कला मनोरंजन मात्र के लिए ही नहीं, अपितु मनुष्य को शांति और परमआनन्द की अनुभूति कराने में पूर्णतः सक्षम है। मानव किसी भी कला को केवल उसके स्थूल अथवा बाहरी रूप से न आँककर, उसकी गहराई के तल तक उतरे तो वह अपने चँचल मन के पार एक गहन शांति की अनुभूति प्राप्त कर सकता है। यही तथ्य मेरे शोधकार्य की मूल प्रेरणा रहा। संगीत का प्रयोजन केवल चित्त का रंजन कर हृदय तरंगित करना ही नहीं, बल्कि उससे कहीं गहरे तल पर मनुष्य की चेतना को उस परम नाद से जोड़ देना है जिससे उसकी आत्मा का उत्थान होता है। मनुष्य शरीर, मन और आत्मा का एकात्मक रूप है, और संगीत इन तीनों तलों तक मनुष्य को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। इस शोधकार्य द्वारा मैंने संगीत को मनोरंजन मात्र के घेरे से बाहर निकालकर उसकी अन्य विलक्षणताओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

संगीत केवल भाषा, शब्द तथा माधुर्य का ही नहीं अपितु उस ध्वनि पुंज का भी सहभागी है, जो इसके मूल प्रभाव को सर्वप्रथम प्राण प्रदान करता है। संगीत में ऐसी चमत्कारी शक्ति है जो मानव जीवन के हर पक्ष को प्रभावित करती है। प्राचीन काल में संगीत का आध्यात्मिक महत्व तो था ही, मगर उसके अतिरिक्त रोग एवं अन्य व्याधियों का निवारण करने में भी संगीत सहायक होता था। हमारे ग्रंथों में हमारे ऋषि, मुनि एवं संगीतज्ञों ने हर स्वर की उत्पत्ति, स्थान आदि का विशिष्ट स्वरूप से वर्णन किया है। शरीर के विभिन्न अंगों पर संगीत में निहित स्वरों का प्रभाव बताया गया है।

मनुष्य की दृष्टि मात्र बाह्य स्वरूप देखने वाली होती है। यही कारण है कि इतना स्वर्णिम इतिहास होने पर भी आधुनिक युग में संगीत की विज्ञान एवं आध्यात्म दोनों से ही दूरी में वृद्धि होती गई और धीरे-धीरे इनके बीच का पारस्परिक संबंध क्षीण होती चला गया। यदि हम अपने सामाजिक, कलासम्पन्न

एवं आध्यात्मिक जीवन को एकसाथ सम्पन्न करना चाहते हैं, तो मानव जीवन में प्राथमिक आवश्यकता शुद्ध मन एवं विचार होने और संवेदनशील सहृदय अनुभूतियों के उत्कर्ष द्वारा आत्मिक उन्नति को उपलब्ध करना है इसलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य की देह तथा उसका मन-मस्तिष्क दोनों ही स्वस्थ हों।

प्राचीन काल के ऋषि मुनियों से लेकर आधुनिक मनोवैज्ञानिक खोजों तक अपने शोध-अनुभवों एवं प्रयोगों के आधार पर कई संगीतज्ञों, योगियों एवं मनोचिकित्सकों ने नाद-योग, वैदिक मंत्र, राग चिकित्सा आदि के रूप में संगीत के द्वारा कई सफल प्रयोग किए हैं। संगीत में असीम सामर्थ्य है। चित्त-वृत्तियों का विरोध करके मन को पवित्रतम बनाने की अपार क्षमता है। मात्र मनोरंजन के क्षेत्र तक सीमित न रहकर, अपनी सूक्ष्म एवं प्रभावशील विलक्षणताओं द्वारा संगीत मनुष्य के जीवन में परम आनन्द लाने का सामर्थ्य रखता है।

‘नाद’ संगीत से पहले भाव एवं लयात्मक ध्वनि की अनुभूति है जो अंतरिक्ष के साथ-साथ मनस को भी व्यवस्थित प्राण देती है। वेद, उपनिषद्, योगदर्शन, व्याकरण और आध्यात्मविद्या के इन आद्य ज्ञान ग्रंथों और शास्त्रों में नाद को अपार महत्व दिया गया है। समस्त ध्वनियों एवं संगीत की उत्पत्ति नाद द्वारा ही हुई है। अनाहत नाद अथवा ‘ऊँ’ ध्वनि का सभी संप्रदायों में महत्व है क्योंकि ध्वनि व ऊर्जा को सभी ने मुख्य तत्व माना है। विभिन्न धर्मों के उपासकों की जीवनशैली एवं विचारधारा भले ही एक-दूसरे से विपरीत हैं, किन्तु सभी धर्मशास्त्रों एवं धर्मप्रवर्तकों की शिक्षाओं का सार सूत्र नाद की साधना ही है।

नाद जो हमारे भौतिक और आत्मिक दोनों ही रूपों से गहराई से जुड़ा हुआ है। उस परम ऊर्जा का हिस्सा है जो लौकिक जगत को पारलौकिक जगत से जोड़ती है। ‘ओऽम्’ चाहे शब्द मात्र की तरह उच्चारित किया जाए या नादोपासना द्वारा सूक्ष्म रूप से मात्र उसका श्रवण किया जाए, दोनों ही तरीकों द्वारा वह हमारी ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बना देता है। संगीत साधना में भी ऊँ के

समस्त गुणों को पूर्णतः जिया जाता है। स्वर साधना ध्वनि को निरन्तर एक ही कंपन से बाहर व भीतरी ब्रह्माण्ड में स्थापित करना ही है। योगी और संगीतज्ञ दोनों ही अपने शरीर को साधना का मार्ग चुनते हैं तथा स्थूलनाद से सूक्ष्मनाद तक की यात्रा तय करते हैं। अपने आध्यात्मिक अनुभवों से इन योगियों ने नादतत्व की शक्ति तथा उसके स्वरूप का सूक्ष्मातिसूक्ष्म और विशद विवेचन किया है। संगीत और योग दोनों ही नादात्मक विद्याएँ हैं। धर्म मन एवं आत्मा का मार्गदर्शक है। समस्त धर्मों ने अपने विचारों का प्रचार करने हेतु किसी न किसी रूप में संगीत का प्रयोग किया चाहे वह हिन्दू धर्म में की जाने वाली 'स्तुति' रूप में हो या दरगाहों में गाई जाने वाली 'कव्वालियों' में हो। सिख धर्म में 'शबद गान' का रूप ले, या चर्च में होने वाली 'सामूहिक प्रार्थनाओं' में प्रभु का गुणगान करन हो, संगीत सभी धर्मों द्वारा अपनाया गया साधन है।

हमारे प्राचीन ऋषि मुनि एवं संगीतशास्त्रियों ने ध्वनि के क्षेत्र में विशेष गहन अध्ययन किए। शब्दों और ध्वनियों के मन एवं वातावरण पर प्रभाव जानकर ऐसी रचनाओं को जन्म दिया, जिनका सस्वर उच्चारण करने से वह एक निर्धारित प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम थी। इन्हीं शब्दों एवं ध्वनि विशेष के मिश्रण को 'मंत्र' की संज्ञा दी गई। हमारे प्राचीनकाल में निर्मित मन्दिरों इत्यादि की वास्तुकला को भी ध्वनि स्पन्दन एवं ध्वनि गुंजन के अनुसार ही आकृत किया था। इसी से हमें ज्ञात होता है कि हमारे प्राचीन मनीषी ध्वनि के महत्व और उसके प्रभावों को गहराई से जानते थे और जनसाधारण को विभिन्न माध्यमों द्वारा उन्होंने ध्वनि के प्रभावों से अवगत कराया एवं लाभान्वित किया।

मनोवैज्ञानिक के क्षेत्र में संगीत को लेकर कई प्रयोग विश्वभर में किए गए और वर्तमान में भी किए जा रहे हैं। इन समस्त प्रयोगों के बेहद सकारात्मक परिणाम हमारे समक्ष आए हैं। संगीत को मनोरोगों के उपचार में आज एक सशक्त माध्यम माना जा रहा है तथा इस पूरे विज्ञान को 'संगीत चिकित्सा' के नाम से जाना जाता है। संगीत द्वारा उत्पन्न तरंगों हमारे मस्तिष्क की तरंगों पर अपना प्रभाव डालती हैं। मनुष्य के मन पर होने के साथ-साथ पेड़-पौधों एवं

वनस्पतियों पर भी संगीत के विभिन्न प्रभावों के कारण संगीत चिकित्सा आज विज्ञान के क्षेत्र में लोकप्रिय विषय बनती जा रही है। पशु-पक्षी एवं पेड़-पौधों में भी संवेदनशीलता प्राप्त होती है। संगीत इन सभी जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों पर भी अपने सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है।

समूचे संसार में अब धीरे-धीरे संगीत की उपादेयता का आभास हो रहा है। आदिकाल से ही संगीत किसी न किसी रूप में मानव का प्राकृतिक मनोरंजन रहा है। संगीत के द्वारा मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभावों से व्यक्ति में होने वाले परिवर्तन तथा मानसिक ग्रंथियों को सुलझाने के लिए रोग के उपचार के रूप में संगीत का विकसित प्रयोग आधुनिक मनोविज्ञान का अभिन्न रूप है। विभिन्न रसोपयुक्त स्वरों अथवा रागों एवं तालों के प्रयोग से मनोरोगियों को अपेक्षित लाभ हुआ है।

समस्त कलाओं में सूक्ष्मतम होने के कारण संगीत आत्मा को सभी मतभेदों से ऊपर उठाने में सहायक होता है। संगीत मात्र विनोद का साधन ही नहीं, बल्कि अपने आप में एक पूर्ण साधना है। संगीत के संसर्ग रहने पर कोई भी व्यक्ति उन आदर्शों के प्रति विमुख नहीं रह सकता, जिनसे मानव का उत्कर्ष होता है। संगीत दिशाहीन मानवता को एक नई दृष्टि प्रदान करने में सक्षम है और इस की शक्ति की उपयोगिता मानवीय अंतःकरण को भाव विभोर करने तथा उसकी आस्थाओं और मान्यताओं को ऊर्ध्वगामी बनाने में है।

आधुनिक कलाकारों ने प्रायः शब्द, नाद एवं ध्वनि आदि के विषय में गंभीरता से विचार नहीं किया। नाद के आधार स्वरूप एवं कार्य को समझने से विचार शक्ति का 'तत्त्व सम्बन्ध' समझा जा सकता है। संगीत में नाद की व्यापकता को समझने के लिए गहन अध्ययन एवं चिन्तन की आवश्यकता होती है। किन्तु अक्सर देखा गया है कि संगीत के आधुनिक कलाकार, शिक्षक एवं शिक्षण ग्रहण कर रहे समस्त छात्र-छात्राएँ संगीत के कलात्मक पक्ष के ज्ञान तक ही सीमित रह गए हैं। यह शोधकार्य समस्त संगीत से जुड़े लोगों को पुनः

संगीत के मूल आध्यात्मिक स्वरूप एवं उसके अन्य गुणधर्मों का साक्षात्कार कराने का एक छोटा सा प्रयास है। संगीत जगत से जुड़े सभी लोग संगीत विद्या ग्रहण एवं प्रदर्शित करें, किन्तु इस विषय पर भी गौर करें कि संगीत समूचे ब्राह्मण्ड के प्राणियों, जीव-जन्तुओं एवं वातावरण को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। आज के युग में संगीत द्वारा आत्मा एवं परमात्मा से संबंध स्थापित करने वाली शुद्ध और निर्विकार कला कहीं छूटती हुई नज़र आ रही है और वह शुद्ध चैतन्य अवस्था जो योगियों, भक्तों एवं प्राचीन ऋषि मुनियों ने संगीत साधना एवं नाद पर गहराई से चिन्तन मनन करने पर प्राप्त की थी, वह बिल्कुल ही विस्मृत न हो जाए इसलिए संगीत की आध्यात्मिकता एवं उसकी सूक्ष्मता, जो उसकी आत्मा है, हमें उसे वापस लाना है। यदि संगीत मात्र एक मनोरंजन का साधन बनकर रह जाएगा तो मनुष्यता उसकी अन्य गुणकारी विलक्षणताओं का लाभ न ले पाएगी। संगीत से जुड़े समस्त लोगों का दायित्व है, कि वे संगीत के (कलात्मक) गुणों के साथ-साथ उसके आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों का भी ज्ञान प्राप्त करें और ज़्यादा से ज़्यादा इन गुणों का प्रचार करें ताकि जो लोग संगीत से जुड़े न हों वे भी इन गुणों द्वारा लाभान्वित हो सकें।